

साधारण मनुष्य को ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनाने वाले, बेहद के ज्ञान-सागर बाप ने हम बच्चों को कहा, तुम्हें कर्मातीत अवस्था को पाना है तो मन-बुद्धि से पूरा-पूरा सरेन्डर होना पड़ेगा. शरीर छोड़ते समय धन, दौलत, बच्चे आदि कुछ भी याद न आये. एक बाप की याद में ही शरीर का त्याग करें, तब कर्मातीत अवस्था को पा सकेंगे.

हम चेक करें की हमारा मन दिन-भर में किसमें ज्यादा बीजी होता है - तो चार बातें आयेगी. जिसे हम क्रमशः ही हमारे में चेक करेंगे और उसमें से हमारी मन-बुद्धि को हटाने की कोशिश करेंगे.

चार बातें हैं -- शरीर, सम्बन्ध, सम्पत्ति, और साधन

सबसे पहले साधनों से मन-बुद्धि को कैसे निकाले. आज-कल हमारा मन सबसे ज्यादा जाता है सेल-फोन पर, फिर है कार पर और बाद में है कोम्प्युटर, टीवी....लिस्ट लंबी है. अगर हम सच्चे दिल से अपने-आप को यानी अपनी अन्तर-आत्मा को पूछें कि इसमें से कोई भी साधन मुझ आत्मा को सुख-शांति देता है, तो सही जवाब तुरंत मिलेगा. अमेरिका में ब्रह्माकुमारिझ का एक सेन्टर है (peace village) जहाँ पर कोई भी सेल-फोन सर्विस प्रोवाइडर के टावर कि सिग्नल पहोचती नहीं है और हर साल वहाँ बहुत से लोग मुलाकात लेते हैं और सब के मुख से इतना जरूर निकलता है कि सेन्टर में शांति बहुत अच्छी है और इसका एक कारण ये भी है की वहाँ सेल-फोन युज नहीं हो सकता, क्योंकि सिग्नल ही नहीं है. अब कलयुगी तमोप्रधान वायुमंडल में रहते स्वयं को सेल-फोन सिग्नल से तो बचा नहीं सकते लेकिन बाबा ने हमें राजयोग सिखाकर हमारी बुद्धि को डिवाइन बना दिया है, जिसे हम अपने मन को कंट्रोल जरूर कर सकते हैं. इसका मतलब है साधनों को युज करना है लेकिन अपनी जरूरीयात अनुसार, ना की अपने शोख के कारण, उसमें वशीभूत नहीं होना है.

दूसरा है सम्पत्ति. जरूरियात से ज्यादा, गलत तरीके अपना-कर सम्पत्ति इकट्ठी करनेवालों की हालत तो हम जानते ही हैं, रात को नींद नहीं आना, बिना कारण टेन्सन में रहना, छोटी उमर में ही हार्टएटेक आना....लिस्ट लंबी है. अगर ईश्वरीय नियमों के आधार पर ही कमायेंगे, ज्यादा लोभ-लालच में नहीं जायेंगे और कोई भी गलत तारिका नहीं अपनायेंगे तो हमारे पास सम्पत्ति होते भी उसमें लगाव नहीं रहेगा, ये एक कुदरती सत्य है. याद रहे धन को सम्पत्ति कहा जाता है, माया नहीं. जभी हम धन को पाने के लिए लोभ-लालच करते है तो उसमें हमारा मोह हो जाता है और वही अन्त में दुख देता है.

तीसरा है सम्बन्ध. बाबा कलयुगी सम्बन्ध को बंधन कहते हैं क्योंकि यहाँ के सम्बन्ध ज्यादातर दुख देने वाले हैं. जब की सतयुग के सम्बन्ध सुख देने वाले हैं. यहाँ का कोई भी सम्बन्ध किसी के शरीर से मोह या

लगाव के आधार पर ही होता हैं. सतयुग में आत्मिक सम्बन्ध हैं उसमें कोई विकार की बदबू नहीं हैं. हमें स्वयं में चेक करना हैं की हमारे किसी भी सम्बन्ध में बंधन तो नहीं हैं. ऐसा तो नहीं के इसके बिना रह नहीं सकते. याद रहे अगर मेरा कोई भी सम्बन्ध में बंधन हैं तो वही अन्त समय में याद आयेगा और हम फेल हो जायेंगे. सर्व सम्बन्धों से मुक्त होने का उपाय एक ही हैं की सर्व सम्बन्ध मुझे एक बाप से ही अनुभव करने हैं और इसके लिए बार-बार एक ही बात याद रहे मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई.

सबसे ज्यादा हमारा लगाव होता हैं स्वयं के शरीर में. एक होता हैं शरीर की संभाल करना और दूसरा होता हैं शरीर में मोह होना. शरीर का संभाल करने के लिए शरीर को स्वच्छ, और्गेनिक, फ्रेश, शुद्ध शाकाहारी, ईश्वरीय नियमों अनुसार भोजन दो, नियम अनुसार व्यायाम करो, सिझन अनुसार कपडे पहनो और ईश्वरीय नियम अनुसार नींद और स्नान करो. लेकिन अगर शरीर में मोह है तो शरीर को बार-बार आईने में जाकर देखेंगे, शरीर का शृंगार करेंगे, शरीर में कोई रोग न हो तो भी डॉक्टर के पास इसको और भी ज्यादा रुष्ट-पुष्ट कराने के लिए जायेंगे, शरीर को गंदा भोजन देंगे और शरीर द्वारा अलग-अलग रसा-स्वाद लेंगे...ऐसी बहुत लम्बी लिस्ट हैं जो हम अपने में चेक करें की हमारा इस कलयुगी देह से कितना मोह हैं.

बाबा कहते हैं हमारा अन्त समय ऐसा हो जैसे की एक सर्प अपनी खाल निकाल देता हैं ऐसे हम आत्माये भी बाबा की याद में खुशी-खुशी शरीर को छोड दे तो अवश्य कर्मातीत अवस्था को पायेंगे.

ॐ शान्ति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .